

बेर वृक्ष पर वैज्ञानिक

लाख की खेती



भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

नामकुम, राँची - 834 010, झारखण्ड

दूरभाष : 0651-2261156, फ़ैक्स : 0651-2260202

ई-मेल : ilnrg@ilri.ernet.in

हमसे सम्पर्क करें : <http://ilri.ernet.in>



बेर वृक्षों का उपयोग फल के लिये तो होता ही है लेकिन दूसरी दृष्टि से देखें तो यह लाख की खेती के लिये अति उपयोगी है विशेष बात यह है कि इस पर सभी प्रकार के लाख कीट पाले जा सकते हैं चाहे वर्ष की दो-फसली लाख कीट हो या उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के कुछ भागों में पायी जाने वाली तीन-फसली। दो-फसली लाख कीट की रंगीनी और कुसमी दोनों प्रकार के लाख का उत्पादन इस वृक्ष पर किया जाता है जबकि कुसुम वृक्ष पर सिर्फ कुसमी और पलास वृक्ष पर रंगीनी ही उत्पादित कर सकते हैं।



लाख लगी बेर की टहनियां

दो-फसली रंगीनी लाख की खेती

रंगीनी लाख से वर्ष में दो फसलें बैसाखी (ग्रीष्मकालीन) और कतकी (वर्षाकालीन) ली जाती है जिसके लिये क्रमशः अक्टूबर माह और कतकी के लिये जुलाई माह में कीट संचारण करते हैं जो 8 और 4 माह पश्चात जुलाई और अक्टूबर में तैयार हो जाती है।

बैसाखी अरी (कच्ची) फसल का उत्पादन

यह पद्धति गर्म स्थानों में प्रयोग की जाती है। इसके अनुसार बेर का उपयोग पलास के साथ सम्मिलित रूप से करते हैं। गर्मी में मई और जून माह में तापमान अधिक और बेर पर पत्तियों के अभाव के कारण

लाख कीट मरने लगते हैं अतः इस वृक्ष से कच्ची फसल ही काट लेते हैं तथा अगली फसल के लिये बीहन लाख, पलास या अन्य वृक्ष जैसे पोढ़ो, पुटकल, पीपल इत्यादि वृक्षों से लेते हैं।

- दवा का छिड़काव शत्रु कीटों और फफूंद की रोकथाम के लिये करते हैं। इसे बनाने के लिये 15 ली. पानी में 15 मि. ली. फिप्रोनिल तथा 3 ग्राम कारबेन्डाजिम पावडर मिलाकर बनायें।
- पलास पर बैसाखी फसल की ही भांति पहला छिड़काव कीट संचारण के एक माह पश्चात तथा दूसरा छिड़काव जनवरी के आखिरी या फरवरी के प्रथम सप्ताह में नर का वयस्क कीट न निकला हो तब देखकर करें। कतकी फसल में एक ही छिड़काव, कीट निकलने के एक माह बाद करें। छिड़काव लाख लगी टहनियों पर ही करें।

उत्पादकता: औसत आकार के एक वृक्ष पर करीब 2 कि.ग्रा. बीहन लगाकर सामान्य परीस्थितियों में 6 से 8 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन प्रति वर्ष लिया जा सकता है।

दो-फसली कुसमी लाख की खेती

बेर के साथ अन्य (कुसुम या गलवांग) पोषक वृक्षों का समन्वय

कुसमी लाख से भी वर्ष में दो फसलें अगहनी (शीतकालीन) और जेठवी (ग्रीष्मकालीन) प्रत्येक 6 माह की क्रमशः जुलाई/अगस्त और जनवरी/फरवरी में लगाई जाती है। कुसमी लाख का उत्पादन बेर पर आसानी



बेर वृक्ष पर कीट संचारण

से किया जा सकता है लेकिन गर्मी के दिनों में बेर पर पत्तियों के अभाव के कारण जेठवी फसल अधिक तापमान नहीं सहन कर पाती और मरने की सम्भावना अधिक होती है। अतः ऐसे क्षेत्रों में अन्य प्रकार



बेर वृक्षों का बागान

के कुसमी पोषक वृक्ष जैसे कुसुम और गलवांग इत्यादि की आवश्यकता होती है। इसके लिये निम्नलिखित पद्धति अपनाया जा सकता है

- कुल कुसुम वृक्षों का दो खण्ड (प्रत्येक में वृक्षों की संख्या बराबर) तथा बेर का एक खण्ड बनाते हैं।
- कुसुम वृक्षों का उपयोग ग्रीष्मकालीन फसल (जेठवी) के लिये एक वर्ष के अन्तराल पर तथा बेर का प्रतिवर्ष शीतकालीन फसल (अगहनी) के लिये करते हैं।
- सर्वप्रथम बेर के वृक्षों की काट-छांट जनवरी या फरवरी माह में करते हैं तत्पश्चात फसल-कटाई से ही वृक्षों की काट-छांट हो जाती है।
- काट-छांट के 6 माह पश्चात जून-जुलाई के आस-पास बेर वृक्षों पर कीट संचारण किया जाता है।
- फसल कटाई का कार्य जनवरी-मार्च के बीच जब बीहन तैयार हो जाये और शिशु कीट निकलना प्रारम्भ कर दें, तब करना चाहिये।

- कटाई से प्राप्त बीहन कुसुम वृक्षों पर लगा सकते हैं। आवश्यकता से अधिक होने पर बाजार में भी बेचा जा सकता है।
- बेर से कभी भी चोरी के डर से नवम्बर-दिसम्बर में कच्ची लाख न काटें अन्यथा नई टहनियां बहुत ही छोटी आयेंगी जिसका विकास बहुत धीमा होगा और वृक्ष लाख खेती योग्य नहीं रह पायेगा।

बेर वृक्षों का कुसमी लाख खेती से लाभ

- रंगीनी की तुलना में उत्पादन अधिक मिलता है।
- कुसुम वृक्ष से इसका समन्वय अच्छा हो जाता है।
- कुसुम वृक्ष पर शीतकालीन फसल सामान्यतः कम होती है जिससे अगली फसल लगाने के लिये बीहनलाख की कमी हो जाती है। अतः इस फसल के लिये बेर अति उपयुक्त है।
- बेर पर कुसमी फसल की कटाई का समय इसके काट-छांट के समय से मेल खाता है, अतः अलग से इस प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- कुसुम पर फसल कटाई के पश्चात पुनः संचारण के लिये 1.5 वर्ष का इंतजार करना पड़ता है, जबकि बेर 6 माह पश्चात ही संचारण के लिये तैयार हो जाता है।
- कुसुम पर शीतकालीन फसल पकने के पहले ही जनवरी-फरवरी माह में अधिकतर लाख पपड़ी टहनी से अलग होकर ढीली पड़ने लगती है जिसे बीहनलाख के रूप में उपयोग करना लाभप्रद नहीं होता, क्योंकि इससे शिशु कीटों का विकास पूरी तरह से

नहीं हो पाता और फसल कटाई करते समय झटके से पपड़ी झड़ने का खतरा बना रहता है ।

- बेर का उपयोग कुसमी लाख के लिये बीहन उत्पादन हेतु कर सकते हैं जबकि रंगीनी लाख पालते समय इसे कच्ची लाख के लिये ही उपयोग करते हैं।
- कुसुम के साथ सम्मिलित खेती करने पर ऐसे कृषकों को अधिक लाभ होता है जिनके पास कुसुम वृक्ष बहुत कम हो क्योंकि इन्हें पाँच के बजाय दो खण्ड ही बनाकर खेती कर सकते हैं।

उत्पादकता: औसत आकार के एक वृक्ष पर करीब 2-3 कि.ग्रा. बीहन लगाकर सामान्य परिस्थितियों में 6 माह पश्चात 15 से 20 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन लिया जा सकता है।

सम्पर्क सूत्र:

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण विभाग

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

नामकुम-राँची - 834010

फोन : 0651 - 2261154